"निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र में बैंकों की लाभदायकता का मूल्यांकन"

(आई.सी.आई.सी.आई. एवं एस.बी.आई. बैंकों की वर्धा शाखाओं के विशेष संदर्भ में)

प्रस्तुतकर्ता

विशेष कुमार श्रीवास्तव

एम.बी.ए.

सत्र-2010

शोध निर्देशक

डॉ.रामप्रकाश ओ. पंचारिया

विभागाध्यक्ष

बी.डी.कॉलेज सेवाग्राम, वर्धा

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा – 442005 (महाराष्ट्र), भारत

"निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र में बैंकों की लाभदायकता का मूल्यांकन"

(आई.सी.आई.सी.आई. एवं एस.बी.आई. बैंकों की वर्धा शाखाओंके विशेष संदर्भ में)

प्रस्तावना -

शोध-प्रबंध के अंतर्गत विद्यार्थी ने "निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र में बैंकों की लाभदायकता का मूल्यांकन"(एस.बी.आई.एवं आई.सी.आई.सी.आई.बैंकों की वर्धा शाखाओं के विशेष संदर्भ में) एवं अग्रिम तथा विभिन्न प्रकार की बैंकों द्वारा प्रदान की जाने वाली विभिन्न सेवाओं के मध्य संबंध का गहन अध्ययन एवं विश्लेषण कर यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि क्या निजी एवं सार्वजनिक बैंक अपने निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने में कहाँ तक सार्थक सिद्ध हुई है तथा बैंकों कि लाभदायकता से देश के आर्थिक विकास में वृद्धि हुई हैं।

प्रस्तुत शोध में निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की लाभदायकता के मूल्यांकन का अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा। साथ ही ऋण प्रबंध कि उपयोगिता पर भी शोधार्थी द्वारा पर्याप्त ध्यान केन्द्रित किया जाएगा।

<u>साहित्य पूनरावलोकन</u>-

शोध विषय से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित कुछ शोध कार्य जो विभिन्न शोधार्थियों द्वारा किए गए है, जिनमें से कुछ प्रमुख शोध कार्यों का अध्ययन शोधार्थी द्वारा भी किया गया है। जो कि निम्न इस प्रकार है-

महरोत्रा,एच.सी.- ने अपने शोध अध्ययन में **"मैनेजमेंट ऑफ अर्निंग्स इन इंडियन कंपनीज"** में देश कि प्रमुख लोहा एवं इस्पात, सीमेंट, कागज,कॉटन एवं जुट उद्योगों में आय के प्रबंध का विस्तृत अध्ययन एवं विश्लेषण किया है। साथ ही उन्होने अपने शोध अध्ययन एन आय (नेशनल इनकम) कि समस्या एवं उसके नियोजन से संबंधित प्रमुख सुझाव भी प्रस्तुत किए है।

सिंह,दीपक- अपने शोध अध्ययन में **"ए कम्परेटिवस्टडी ऑफ मार्केटिंग स्ट्राटेटीज़ ऑफ सिलेक्टेड कमर्शियल बैंकस"** के अंतर्गत व्यापारिक बैंकों में विभिन्न प्रकार की मार्केटिंग स्ट्राटेजीज का गहन अध्ययन एवं परीक्षण किया है। साथ ई उन्होने अपने शोध अध्ययन के माध्यम से व्यापारिक बैंकों की मार्केटिंग स्ट्रेटेजीज के लिए उपयोगी एवं महत्यपूर्ण सुझाव भी प्रस्तुत किए है।

गर्ग, निधि –ने अपने शोध अध्ययन के अंतर्गत ,**'मध्यप्रदेश के जिला सहकारी केंद्रीय बैंकों का वित्तीय प्रबंध एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'** किया है। उन्होने अपने शोध के अंतर्गत वित्तीय प्रबंध से संबंधित महत्वपूर्ण पहलुओं का गहन अध्ययन एवं विश्लेषण किया है। उन्होने अपने शोध अध्ययन के नाट में वित्तीय प्रबंध से संबंधित महत्वपूर्ण सुझाव भी प्रस्तुत किए हैं और साथ ही भावी शोध की संभावनाओं पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला है।

उपर्युक्त शोध अध्ययनों के अतरिक्त शोधार्थी ने अपने विषय से संबंधित अनेक विद्वानों के ग्रंथ,पत्र-पत्रिकाएँ, बैंक से संबंधित वार्षिक लेखें ,वित्तीय स्थिति विवरण, विभिन्न नीतियों एवं वार्षिक प्रतिवेदनों आदि का भी गहन अध्ययन किया जाएगा। शोध से संबंधित शोधार्थी ने पूर्व में शोध कार्य किए है शोधार्थी ने उनके अध्ययनों के अध्ययन के पश्चात अपना शोध शीर्षक "निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र में बैंकों की लाभदायकता का मूल्यांकन" "(एस.बी.आई.एवं आई.सी.आई.सी.आई. बैंकों की वर्धा शाखाओं के विशेष संदर्भ में) चुना है।

शोध के उद्देश्य-

सामाजिक शोध का उद्देश्य केवल नए सिद्धांतों की खोज करना ही नहीं होता, किन्तु पुराने सिद्धांतों का नई परिस्थितियों में सत्यापन करना भी होता है। शोध के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए पी.बी.यंग ने कहा है कि "सामाजिक शोध का एक उद्देश्य अनुभव सिद्ध तथ्यों के आधार पर वैज्ञानिक अवधारणाओं को प्रस्तुत करना तथा उन्हें विकसित करना है।"

शोध प्रबंध के लिए मुख्य उद्देश्य होगा-

- निजी क्षेत्र में आई.सी.आई.सी.आई. बैंक कि स्थापना कि आवश्यकता का अध्ययन।
- सार्वजनिक क्षेत्र में एस.बी.आई. की स्थापना की आवश्यकता का अध्ययन।
- आई.सी.आई.सी.आई. एवं एस.बी.आई. वास्तविकता में जनता को लाभान्वित कर पा रहे है? और क्या स्वयं भी लाभान्वित हो रहे हैं, का अध्ययन करना।

इसके पूर्व विभिन्न प्रकार की बाँकों से संबन्धित जिनते भी शोध कार्य किए गए है वे सभी विकास की संभावनाओं अथवा कृषि उद्योग से जुड़े हुये क्षेत्रों तक ही सीमित है। अतः इन्हीं आवश्यकताओं और उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए अपना शोध विषय चुना है।

परिकल्पना –

शून्य परिकल्पना -आई.सी.आई.सी.आई. एवं एस.बी.आई. द्वारा लोगों को उपलब्ध कराये जाने वाले सेवाओं एवं सुविधाओं में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।

शोध परिकल्पना -आई.सी.आई.सी.आई. एवं एस.बी.आई. द्वारा लोगों को उपलब्ध कराये जाने वाले सेवाओं एवं सुविधाओं में सार्थक अंतर हैं।

शोध का क्षेत्र -

शोध अध्ययन प्रारंभ करने से पूर्व उसका क्षेत्र भी निश्चित कर लेना बहुत आवश्यक है । मौलिक समस्याओं के संबंध में शोध करते समय क्षेत्र का विस्तृत व व्यापक होना आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा आवश्यकता एवं उपयोगिता के आधार पर तथा साधनों की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए अपने शोध अध्ययन के क्षेत्र के रूप में वर्धा जिले को चुना है। क्योकि शोधार्थी की अधिकांशतः शिक्षा वर्धा जिला में ही हुई है इससे शोधार्थी का आकर्षण वर्धा जिला के प्रति होने के कारण वर्धा जिला को ही अपने शोध अध्ययन के क्षेत्र के रूप में चुना है।

शोध प्रविधि-

शोध अभिकल्प (Research Design)

प्रस्तुत शोध का स्वरूप मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों होने के कारण इस शोध में मिश्र पद्धति (Mixed Method) का उपयोग किया जाएगा।

निदर्शन का चयन/शोध का चयन- प्रस्तुत अध्ययन निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र में बैंको की लाभदायकता का मूल्यांकन (आई.सी.आई.सी.आई. एवं एस.बी.आई.बैंकों की वर्धा शाखाओं के संदर्भ में) विषय से संबन्धित है वर्धा जिला में बैंको की इकाइयों का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है, और समग्र इकाइयों का अध्ययन करना शोधार्थी के लिए अत्यंत कठिन कार्य है । इसीलिए शोधार्थी ने अपने उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शोध क्षेत्र के आधार पर चयनित बैंको का अध्ययन करने का निर्णय लिया।

जिसमें निजी तथा सार्वजनिक क्षेत्रों की बैंकों में से दैव निदर्शन विधि के आधार पर बैंकों का चयन किया गया है।

N=2 एस.बी.आई (सार्वजनिक क्षेत्र की बैंक) ,आई.सी.आई.सी.आई. (निजी क्षेत्र की बैंक)

चूंकि शोधार्थी इन चयनित बैंकों से भलीभाँति परिचित है और ये चयनीत बैंक वर्धा शाखाओं के आर्थिक विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। इसी आधार को मानकर इन चयनित बैंको का चयन किया है। चयनित इन दोनों बैंकों से सेवा प्राप्त कर रहे शिक्षित ग्राहकों से तथ्य संकलन हेतु 100 ग्राहकों का चयन किया जाएगा।

N =100

तथ्य संकलन प्रविधि

चयनित इन दोनों बैंकों से सेवा प्राप्त कर रहे शिक्षित ग्राहकों से तथ्य संकलन हेतु 100 ग्राहकों का चयन किया जाएगा। इन ग्राहकों से तथ्य संकलन हेतु प्रश्नावली तैयार कर उनसे भरवाई जाएगी।

तथ्य विश्लेषण प्रविधि

चयनित 100 ग्राहकों से प्राप्त तथ्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाएगा। इसमें सारणी तथा आरेख का उपयोग किया जाएगा। इसके अलावे मात्रात्मक प्रश्नों का विश्लेषण निर्वचनात्मक विधि के अंतर्गत किया जाएगा।

शोध अध्ययन की उपयोगिता-

शोध-प्रबंध निजी एवं सार्वजनिक बैंको की लाभदायकता के विभिन्न पहलुओं पर पर्याप्त प्रकाश डाला जाएगा। शोध अध्ययन में ये होगा की बैंको की लाभदायकता प्रबंध एवं उसकी उपयोगिता के स्तर को बेहतर बनाया जाए। इस शोध कार्य में निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र क्षेत्र की अन्य बैंकों मे भी सुधार की आशा की जाएगी।

शोध की सीमाएं –

अध्ययन की उपादेयता की दृष्टि से उसकी सीमाएं निर्धारित करना अति आवश्यक है। इससे अध्ययन को विराम प्राप्त होता है तथा महत्वपूर्ण विषय भी हमारे समक्ष प्रस्तुत होता है। वर्धा शाखाओं में कार्यरत निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की लाभदायकता का ही अध्ययन किया जाएगा।

संभावित अध्याय सूची-

प्रथम अध्याय – शोध अभिकल्प

1.1 शोध समस्या का चयन

1.2 शोध के उद्देश्य

1.3 शोध का क्षेत्र

1.4 निदर्शन का चयन

1.5 समकों का संकलन

1.6 शोध अध्ययन की उपयोगिता

1.7 शोध की सीमाएं

द्वितीय अध्याय – लाभदायकता की अवधारणा

2.1 लाभदायकता से अभिप्राय

2.2 लाभदायकता के उद्देश्य

2.3 लाभदायकता की आवश्यकता

2.4 निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र की बैंक लाभदायकता का भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान

2.5 आई.सी.आई.सी.आई. एवं एस.बी.आई का परिचय एवं वर्तमान स्थिति

तृतीय अध्याय –चयनित निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की कार्यप्रणाली

चतुर्थ अध्याय –चयनित निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकों का लाभदायकता मूल्यांकन

पंचम अध्याय-

5.1 निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकों की समस्या

5.2 निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकों की समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव

निष्कर्ष

परिशिष्ठ

संदर्भ ग्रंथ सूची

शर्मा,विनय मोहन (2009). *शोध प्रविधि*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली,वर्ष

जरारे, विजय (2007). *शोध प्रणाली* ए.बी.दी.पब्लिशर्स, जयपुर वर्ष

महरोत्रा,एच.सी.,*सार्वजनिक कंपनीयों में आय का प्रबंध* अप्रकाशित शोध प्रबंध, आगरा विश्वविद्यालय,आगरा.

भारद्वाज, मैथिली (2009). प्रसाद *शोध प्रविधि*, आधार प्रकाशन, पंचकुला, हरियाणा.